"इल्म ना मोती झडो" कि तशरीह

बिस्मिल्लाह हिर रहमान निर रहीम

- नज़म "इल्म ना मोती झडो" by 43rd दाई मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (कु.स.)
- Complied by: Mulla Quddus Hussain
- Translated in Urdu: अल मुक्द्दस अल फ़ाज़िल शेख अहमद अली राज

<u>इल्म ना मोती झडो कि तशरीह</u>

मोती ज़वाहरों सि घर ना सुखन अयां छे, खातिर ना दफ़तर ऊपर लिखीए तो यह बजा छे।

अलहम्दो लिल्लाहि व सलामुन अला इबादिहिल लज़ी नस्तफ़ा अ अल्लाहो खैरुन अम्मा युशरिकून ۰
तमाम हम्दो सना अल्लाह के लिए और सलाम उसके मुस्तफ़ा बन्दों पर, क्या अल्लाह खैर है? य वह जिसको अल्लाह का शरीक मानते हैं?

अम्मा बअद मुल्ला कुद्दूस हुसैन लिखते हैं कि हम हमारे उस्ताद वालिद मुशफ़िफ़क मुल्ला मोहम्मद अली इब्ने मुल्ला सुल्तान अली रनालवी के पास किताब मुनतज़उल अखबार पढते थे, सबक के दौरान मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (कु.स.) कि नज़म, "इल्म ना मोती झडो" का तज़किरा हुआ तब मौसूफ़ उस्ताद बेसाख्ता रो पडे। हमने रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया कि बेटा! क्या बताऊं दिल रो रहा है! फ़िर जरा सुकून होने के बाद कहा सुनो मेरे अज़ीज़ों! मौलाना मोहम्मद बदरूद्दीन (कु.स.) ज़हर से शहीद किए गए। आप के बाद मुद्दई नज़मुद्दीन ने ज़ुल्म व सितम कर के दुनिया लूटने की कोशिश की उस की पेशनगोई मौलाना सैफ़ुद्दीन ने इस नज़म में की है। ऐ परवरदीगार तमाम मुमिनीन व मुमिनात को और हम को इस ज़ुल्म व सितम और अधंकार से इमामुज़ज़मान (अ.स.) के वसीले से बचा ले। और हमारे गुणाहों को माफ़ कर ले। आमीन या रब्बुल आलमीन।

हमारे मौसूफ़ उस्ताद सय्यदना बुरहानुद्दीन और सय्यदना बदरूद्दीन के शागिर्द थे उन्हीं से वह मौलाना बदरूद्दीन (कु.स.) की तरफ़ से नज़मुद्दीन पर नस नहीं होने की मालूमात हासिल की थी और उस ज़माने के बडे-बडे उलुमा (शेख अल फ़ज़िल दाऊद भाई वज़ीरी, शेख अल फ़ाज़िल हुसैन भाई माणडवी वाला, वगैरह) से ज़ाहिरी बातिनी नस की जानकारी हासिल की थी!! मौसूफ़ उस्ताद बारहा फ़रमाया करते थे मौलाना बदरूद्दीन आक़ा को नज़मुद्दीन ने अपने घर की औरत के ज़रीए ज़हर से शहीद किया जिस तरह इमाम हुसैन (अ.स.) को ज़हर पहुँचा था। उस्ताद साहब बारहा हम को तंबिया करते और फ़रमाते कि नस के साहब हमसे दूर हो गए हैं लिहाज़ा तुम वक्त के मुताबिक अमल करते रहना व इल्ला (वरना) दुनिया के कुत्ते भोंकेंगे और तुम को फ़ाड खाऐंगे!!

फ़िर आपने इस नज़म की तशरीह की और फ़रमाया कि फ़िलहाल इस को ज़ाहिर मत करना, मुद्दत बाद जनाब शेखुल फ़ाज़िल मोती वाला ने इस तशरीह की कमी को पूरी की और बहुत सी मख्फ़ी बातों से मुझे (कुद्दूसी) आगह किया। बाद में मेरे दोस्तों ने इसरार किया कि अब इस तशरीह को ज़ाहिर करने का वक्त आ गया है लिहाज़ा अब इसको शाया करो, अल्लाह सुबहानहू मेरे मौसूफ़ उस्ताद और वालिद माज़िद को और आपके साथीयों को अफ़ज़ल ज़ज़ा अता करे और उनकी नेकियों का समरा (फ़ल) हम को मिले। आमीन।

<u>"इल्म ना मोती झडो" सैफ़ी नज़म कि अहमियत</u>

इस नज़म में गैबी इशारात हैं। शेख सादिक अली साहब (कु.स.) फ़रमाते हैं:
तयां आवी सातवीं माहे शाबान नी यकीन,
ते दिन उर्स थो फ़ातिमा आई नो मुमिनीन,
तकलीफ़ थी पधारा था मज़लिस मां शाहे दीन,
आखिर पडावी एक नसीहत ने थई हज़ीन (गमगीन),
जोडी थी आप यह ते नसीहत ने मुख्तसर,
हिक़मत ना ते नसीहत ना दरीया मा छे दुरर,
आगाह दिल अजब था वह सैफ़ुल हुदा (र) हुमाम,

था मुतस्सिल यह दाई थी हर दम ब दम इमाम (अ.स.),
फ़रमाया था नसीहत मा जे आप यह क़लाम,
वाकेअ मा; सब वह फ़रमाया मोजिब थयु तमाम,
असरार गैब ना था वह सैफ़ी बयान मा,
पोशीदा भेद था ते वह आया इयान मा।

आ नज़म सैफ़ी नि तहरीर सय्यदना इज़्ज़ुद्दीन साहब (क़ु.स.), 44th दाई उल मुतलक ने अपने एक रिसाला में की है जिस का तर्जुमा मौसम-ए-बहार के मुसन्निफ़ शेखुल फ़ाज़िल मोहम्म्द अली मदरासी (र.ह.) ने किया है मुलाहिज़ा कीजिए, "शहरे शाबान सन 1232 हिजरी सातमीं तारीख आपनी मोटी बू साहिबा (र.ह.) उर्स नी महफ़िल मा नातवानी (बिमारी) साथ तशरीफ़ लाया अने एक हिन्दी क़सीदा कि जि मा आप ना वफ़ात नी खबर हती। क़ुरआन मजीद नि तिलावत ना बाद मज़लिस मा ही अला रऊसुल हाजिरीन पढाया।" मौसम ए बहार जिल्द तीजी (3), पेज 641.

याद रहे कि इस नज़म के मुस्नि़फ़ मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन 43 दाई मुतलक की शान दुआतों मे निराली है। शेख सादिक अली साहब लिखते हैं कि, "था मुत्तस्सिल यह दाई थी हर दम ब दम इमाम" इस नज़म में कीका भाई से मक़सूद 46th दाई मौलाना बदरूद्दीन इब्ने मौलान अब्दे अली सैफ़ुद्दीन हैं जब यह नज़म पढी गई तब मौसूफ़ 46th दाई की उम्र 6 साल की थी आप की विलादत सन 1226 हि. की 27वीं माहे रबीउल आखिर हुई और आपकी शहादत सन 1256हि. की जुमादिल आखिर की 29वीं तारीख है। वफ़ात के वक्त आपकी उम्र 30 साल और 2 माह की है। जब यह नज़म पढी गई उस वक्त इस के मुसन्निफ़ मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (क़ु.स.) की उम्र 43 साल और 6 महीने की थी, आपकी विलादत सन 1189 हि. के माह सफ़र की 9वीं तारीख है और वफ़ात सन 1232 हि. के ज़िल्क़ाद की 12वीं तारीख है। इस नज़म के बाद आप फ़कत तीन माह ज़िन्दा रहे। इस नज़म में आप ने आप अपने वफ़ात की और आप के फ़र्ज़दं अर्ज़मंद कीका भाई की यतीमी की पेशगोई फ़रमाई है। जब यह नज़म पढी गई तब मज़लिस में दर्द ओ गम का कोहराम मच गया खुद मौलाना सैफ़ुद्दीन बहुत ही रंज़ीदा हुए।

अब इस नज़म की तशरीह पढिए और तमाम मुमिनीन मुमिनात को पढाईये और तशरीह करने वाले के लिए दुआ ए मगफ़िरत कीजिए। अज़ मुल्ला मोहम्म्द अली बिन मुल्ला सुल्तान अली रनालवी।

(1)
इल्म ना मोती झडो, पढवा नी हट ना करो, अपना मुल्ला सी डरो, कीका भाई जल्दी पढो।

इल्म तहसील (हासिल) करने में हट मत करो, जिद मत करो बल्की इल्म के मोती ला कीमती मोती से अपने आपको मुज़य्यिन करो और इल्म पढाने वाले मुल्ला साहब उस्ताद के फ़रमाबरदार रहकर शागिर्द रशीद बन कर उनकी मुखालिफ़त से डरते रहो। कीका भाई मेरे बेटे मोहम्मद इल्म हासिल करने में जल्दी करो, रगबत से इल्म पढो। इल्म के मोती से मुराद अ आला नफ़ीस इल्म इल्मुल हक़ाइक है जिस इल्म से जान को अबदी ज़िन्दगी मिलती है। जिस तरह जिस्म की ज़िन्दगी पानी और गिज़ा से है। सय्यदनल खत्ताब (र) सूफ़ी उद दुआत ने क्या खूब फ़रमाया है कि: भूख और प्यास दो कातिल बिमारी है जिसकी दवा है पानी और गिज़ा। इन दो भूख और प्यास बिमारीयों की इस दो दवा यानी पानी और खुराक को ज़ाहिल शख्स लज़्ज़त समझता है भला दवा लेने से कब लज़्ज़त मिलती है इस दवा यानि पानी और गिज़ा के ज़रिए इंसान अपने ज़िस्म को बाकी रखना चाहता है जो बिल्कुल ना मुम्किन है। ऐ जिस्म के खादिम तू अपने जिस्म की कब तक खिदमत करता रहेगा भला जिस चीज़ में तेरा नुकसान है उस से ही तू फ़ायदा लेना चाहता है अपने नफ़्स की तरफ़ इकबाल कर, नफ़सानी फ़ज़ाइल कामिल कर, तू नफ़स से ही इंसान है न कि ज़िस्म से। मौलाना मोइय्य्द (क़ु.स.) फ़रमाते हैं क्या मैं इस नूर को ज़ाए कर दूं कि जिस नूर के बाइस मैं मलाइकत किराम की तरफ़ मनसूब हूँ। भला कीमती मोती को ज़लील करने वाला और हलकी नीच सीप को अज़ीज़ रखने वाला आकिल हो सकता है, हरगिज़ नहीं। जान ला कीमत मोती है और जिस्म हलकी सीप है लिहाज़ा इल्म के मोती की माला से अपने जान को मुज़इय्यन करो।

(सय्यदना अल खत्ताब क़ु.स. फ़रमाते हैं कि अफ़ज़ल नफ़स (जान) वह है जो अपनी जात को पहचाने अपनी क़ैफ़ियत और माहियत को समझे अपने जान की मअरिफ़त करने वाला ही अपने रब की मअरिफ़त करने वाला है। जान की मअरिफ़त इल्म से ही होती है। दआवतुल हक़ की बुनियाद इल्म पर ही है।
मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (क़ु.स.) ने इल्म से दाअवतुल हक़ के बाग को सरसब्ज़ शादाब किया अपनी खास दौलत से अल दरस ए सैफ़ी कायम कर के हज़ारों नुफ़ूस को ज़िन्दा कर के बेहतरीन हसनात बाकी रख गए लेकिन आपके बाद आपके फ़र्ज़दं अर्ज़मंद मोहम्मद

बदरूद्दीन (क़ु.स.) के बाद झूठे दावेदार नज़मुद्दीन ने इल्म की नहर को बदं कर दी। तकर्रुब और इस्तिदाद के नाम से बेहिसाब दौलत इकट्ठी की वह सिलसिला आज भी बाकी है और खूब ज़ोर शोर से बाकी है। किस्म-किस्म की जाले बिछाई जा रही हैं जिस से भोले भाले अहलो ईमान शिकार हो रहे हैं।

मौत की बिमारी में मौलाना अब्दे अली सौफ़ुद्दीन (क़ु.स.) फ़रमा रहे है: शिफ़ाउल फ़िकहि..... फ़िकह फ़तवा की शिफ़ा मेरी शिफ़ा है हक़ व तक़वा की बक़ा मेरी बक़ा है। दोनों एक दूसरे से वाबिस्ता हैं लाजिम मलज़ूम है। मैं यह नहीं चाहता कि बाकी रहूं लेकिन दीन व दुनिया की ज़ैबाइश मेरी ज़ैबाइश है दोनों एक है अगर मैं अपने मुत्तालिक मुख्तार बनाया जाऊं तो बेशक मैं मेरी ज़मीन को छोड कर मेरे आसमान को ही अख्तियार करूं, मेरी रिफ़अत बुलंदी के बायस से कब मुझे राहत मिलेगी भला बताओ तो सही कि (इल्म, अमल, फ़िकह, फ़तवा, हक़, तक़वा) कौन वह है जो मेरी जद्दो जहद मुताबिक जद्दो जहद करे (अफ़सोस) अगर मेरी क़ज़ा आई तो दीन की रोशनी को अनकरीब घटा काली अंधेरी छुपा देगी, ज़ुल्मत छा जाएगी, ऐसी हालत में कि मेरे बदर (मौलाना बदरूद्दीन बेटे) में मेरी रोशनी नहीं भरी गई, मैंने मेरे दिल के बर्तन में जो इल्म है वह मैंने उनको नहीं पढाया। इस सैफ़ी बयान में इल्म से मुराद दाअवतुल हक़ का इल्म, इल्मुल तावील वल हक़ीक़त मुराद है नहीं कि दुनयावी इल्म, मुद्दई नज़मुद्दीन इस इल्म को मिटाने की कोशिश में है, इल्मुल हक़ की रोशनी को ज़ुल्मत ढाँक देगी यह पेशगोई इस सैफ़ी बयान में वाज़ेह है; ऐस हि हुआ ज़रा गौर से सुनिए: मुद्दई नज़मुद्दीन ने बुरहानपुर में आशूरा के रोज़ "वल अस्र इन्नल इंसान: लफ़ी खुसरिन" कि मअनी बताते हुए कहा कि इस आयत में इसांन से मक़सूद इमाम हुसैन (अ.स.) हैं मतलब के अस्र की कसम इमाम हुसैन (अ.स.) खोट में है (मआज़ल्लाह)। कितनी भारी गलती है, शर्मनाक बकवास है, इल्मुल हक़ की रोशनी पर अहले बातिल की ज़ुल्मत कैसी छा गई है ज़रा फ़िक्र करिये अल्लाह सुबहानहू अपनी किताब में जगह जगह दाअवते फ़िक्र की है अफ़सोस कि ज़ाहिलों के दिलों पर ताले पडे हुए हैं उन्होंने क़ुरआन को पसे पुशत छोड दिया है। मौलाना बदरूद्दीन (क़ु.स.) के बाद इल्मुल हक़ को मिटाने की कोशिश जारी रही। जहल की ज़ुल्मत छा गई और शाहों कि तरह शाही ठाट बाट क दौरा हुआ, कुटुम्ब परवरी, बैतुल माल से ऐश व इशरत, अय्याशी, फ़हाशी इतनी हद तक पहुँची कि खुद अब्दे अली इमादुद्दीन साहब कहने लगे कि, "हलकना - हलकना" हम हलाक हो गए। मुद्दई नज़मुद्दीन ने झूठा दावा किया कि मैं मुमिनीन के जान व माल का मलिक हूँ। याद रहे कि इमामुज़्ज़मान (अ.स.) बेशक मालिक है मगर उनका भी ऐसा दावा नहीं जो इसका है। हुशियार - हुशियार ऐसे लुटेरे से अपने आप को बचाईये, मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (क़ु.स.) आगाह थे कि मेरे बेटे की शहादत के बाद ऐसी हालत पैदा होगी लिहाज़ा आपने पहले से तंबिया (चेतावनी) फ़रमाई।

(2)
"बावा जी गुलडा थया, दारा थोडा सा रहया, पछे कौन करसे मया कीका भई जल्दी पढो।"

सैफ़ुद्दीन आक़ा (क़ु.स.) तबीई उम्र से बुड्ढे नहीं थे यहां हक़ीक़ी बुढापा मक़सूद है आप छोटी उम्र में इस कमाल को पहुँचे थे कि इमामुज़्ज़मान (अ.स.) से बारहा आपका इत्तिसाल था। जब आपके वफ़ात की खबर कुदसी फ़रिशते ने इमाम (अ.स.) को पहुँचाई तब आपने मज़लिसे अज़ा कायम की। बहुत रंजीदा हुए। शेख सादिक अली साहब ने अपनी नसिहत में इसकी तफ़सील लिखी है। सैफ़ी जनाब फ़रमाते है कि बेटा बदरूद्दीन अब मेरी ज़िन्दगी के दिन कम रहे हैं मेरी वफ़ात के बाद कौन? तुम पर कौन शफ़्क्कत करेगा लिहाज़ा अब जल्द से जल्द इल्म पढो ताकी दाअवतुल हक़ का मन्सब नसीब हो; कीका भाई जल्दी पढो।

(3)
"रात दिन काहिली छे, दिल ऊपर बेकली छे, ऐहवी सूं गाफ़िली छे, कीका भाई जल्दी पढो।"

रात दिन सुस्ती है मेरे दिल को बेचैनी है कि बेटा! तुम बालिग भी नहीं हुए हो और मैं जा रहा हूँ मेरी इल्मी रोशनी से तुम भरपूर नहीं हुए हो और मेरा इंतिकाल करीब है अब बिलकुल गफ़लत मत करो और जल्द-जल्द इल्म हासिल करो।

(4)
"कहूं छूँ थोडा कलाम, मारा मौला छे इमाम, इहना हाथे छे ज़िमाम, कीका भाई जल्दी पढो।"

बहुत कम नसीहत का कलाम कर रहा हूँ वह यह की इमामुज़्ज़मान (अ.स.) मेरे मौला है उन्हीं के हाथ कुल्ली (तमाम) अखतियार है दीन व दुनिया कि बागडोर उन्हीं के दस्त-ए-मुबारक (हाथ) में है लिहाज़ा बेटा इमामुज़्ज़मान को हि अपना मौला मान कर इल्मुल हक़ को हासिल करो।

(5)
"चाहे ति तौर करे, फ़अल फ़िल फ़ौर करे, कोई सूँ घौर करे, कीका भाई जल्दी पढो।"

(6)
"अदना नि आला करे, रांक ने राज़ा करे, टीपा ने दरिया करे, कीका भाई जल्दी पढो।"

इमामुज़्ज़मान (अ.स.) कुल्ली मुखतार छे, आप चाहे ते करे फ़ौरन तरत चाहे तो बेटा तमनि अदना दर्ज़ा सी उठावी ने आला दर्ज़ा तक पहुँचावी दे, फ़क़ीर ने हफ़्त-अकलीम ना बादशाह बनावी दे, कतरा ने दरीया बनावी दे इहमा कोई सूँ घौर करी सके। आक़ा रसूलल्लाह (स.अ.व.) यह सलमान (र) ने अहलेबैत (अ) मा दाखिल किदा इमाम हुसैन (अ) यह हुर्र (र) ने अज़ली हुर्र बनाया। तुर्की नसरानी गुलाम ने शौहदअ मा शामिल कीदा। हब्शी गुलाम जोन ने महकता कस्तूरी बनावी दीदा अने हवे माहरा बाद मोहम्मद इज़्ज़ुद्दीन (कु.स.) माहरा जान नशीन छे, दाईउल हक़ छे, शेख जीवन जी ना आ फ़र्ज़दं अर्ज़मंद ने मैं यह इमामी इल्हाम सी आला मक़ाम बख्शु लिहाज़ा बेटा बदरूद्दीन तमें भी जल्दी जल्दी इल्म व अमल ना दर्ज़ा तेय करो ताकी वलीयुल्लाह तमने आला मक़ाम बख्शी दे।

(7)
"कहूँ ते मानो तमें, वात आ जानो तमें, रमज़ पहचानो तमे, कीका भाई जल्दी पढो।"

महारी आ वात ने मानो अने जानो अने इशारा (रमज़) ने पहचानो आ नस नो रमज़ छे। मौलाना जलाल (कु.स.) यह बे दाऊद पर नस कीदी। मौलाना दाऊद बिन अज़ब शाह (कु.स.) पर नस कीदी अने फ़रमायु कि तमे दाउद बिन कुतुब शाह पर नस करजु, यहां सैफ़ुद्दीन आक़ा यह बेटा मोहम्मद ने "बदरूद्दीन" नु लकब बख्शी ने इशारा कीदु कि यह दाई बनसे लिहाज़ा आप मज़ीद ताकीदन फ़रमावे छे कि:

(8)
"इल्म पर लाज़िम रहो, फ़ज़्ल पर दाइम रहो, नस ऊपर काइम रहो, कीका भाई जल्दी पढो।"

इल्म ना अदद १४० थाए छे अने नस ना अदद भी १४० थाए छे, बेवे इल्म अने नस हम अदद छे। सही इल्म वोज कि जे मनसूस होए, अहलुल हक़ सि मुस्तनद होए, यह बेवे सि वाबिस्तगी फ़ज़ल और फ़ज़ीलत छे। आ बैत मा मौलाना सैफ़ुद्दीन (कु.स.) यह बदरूद्दीन (कु.स.) कीका ने इल्म फ़ज़्ल अने नस पर लाज़िम दाइम अने कायम रहवा ना इरशाद कीदा छे।

मौलाना अली (अ.स.) यह खैर अने फ़ज़ल मुताल्लिक आ मिसल जवाब दीदो कि माल अने औलाद नी ज़्यादती खैर नथी; खैर तो इल्म अने हिल्म नी ज़्यादती छे। यह बेवे सीज तू फ़ख्र कर। तारा सी अच्छु बने तो अल्लाह नु हम्द कर अने बुरु थाए तो इस्तिगफ़ार कर। गुणाहों सि तौबा करनार अने नेकीयों मा शताबी (जल्दी) करनार बेशक साहिबुल खैर छे। बदरी जनाब ने भी यहज सैफ़ी इर्शाद छे।

(9)
"मोटाई जान सो न, कोई नु मान सो न, फ़ख्र ने तान सो न, कीका भाई जल्दी पढो।"

बेटा मोहम्मद! मोटाई सी घमन्डी सी दूर रहजो, यह बाबत कोई नि बात मान सो नहीं अने नाहक़ फ़ख्र अने अकडबाजी सी दूर रहजो। न हक़ फ़ख्र करनार किब्र करनार नि छे ते सि बचता रहजु। (सैफ़ी मौला आइन्दा आवनार मुद्दई एन-काफ़, तोय-सीन बाबत पेशगोई करी रहा छे कि जे यह "अना रब्बुकुमुल अआला" मैं तुम्हारा रब्बे ए आला छूँ जिवो फ़िरओनिया दावा करनार छे।

(10)
"बावा नि चाले चलो, दीन नि राह (वाते) सी पलो, कुफ़्र नि राह सी टलो, कीका भाई जल्दी पढो।"

बेटा बाप की सीरत पर चलते रहो और दीन के रास्ते पर चलते-पलते रहो और कुफ़्र के रास्ते से टलते रहो, उससे हट कर चलो। सैफ़ी आक़ा बदरी मौला के जिस्मानी और रूहानी बाप हैं जिसकी सीरत पर चलना अल्लाह का हक़ीक़ी ईमान है और तागूत का कुफ़्र है।

(11)
"रहयु कोई न रहे, बावा विन कौन कहे, जे खुदा माहि सहे, कीका भाई जल्दी पढो।"

कीका भाई! कोई भी बाकी रहना वाला नहीं सब के सब फ़ानी हैं सिवाए वज़हिल्ला बाकी सब के सब हालिक हैं। मैं तुम्हारा बाप हूँ मेरे सिवा तुमको कहने वाला कौन है मेरी नसीहत मानो मैंने राहे खुदा में बहुत ही मशक्कत उठाई है और हमेशा सब्र से काम लिया है, मुसीबतें सहता रहा हूँ जिस तरह मेरे आबा अज़दाद और बुज़ुर्गाने दीन ने सहा। अफ़सोस मेरे बाद ऐसे मुद्दईया बातिल आऐंगे जिसका काम होगा शाहाना जिन्दगी बसर करना और हक़दारों को महरूम रखना।

(12)

"दुनिया ऊपर न पडो, किबला रु मुँह ने करो, ऊँचा रूतबा ने चढो, कीका भाई ज्ल्दी पढो।"

लिहाज़ा ऐ मेरे प्यारे बेटे दुनिया पर पडा-पडी नहीं करना। हक़ीक़ी क़िब्ला इमामुज़्ज़मान (अ) हैं उन्हीं कि तरफ़ तवज़्ज़ोह करके ताअत कर के और मआरिफ़त हासिल कर के ऊँचे मरातिब को हासिल करना किबला से मुँह नहीं फ़ेरना। मेरे बाद ऐसे मुद्दई लोग आऐंगे कि जो दावा करेंगे कि आले मोहम्मद (अ.स.) के गुलाम (ममलूक-ए-आले-मोहम्मद) होने का और अदालतों में बयान देंगे कि इमाम को पर्दे में जाने को ९०० साल हो गए वह (मआज़ल्लाह) ख्याली हस्ती है और जो कुछ हूँ वह मैं ही हूँ, मैं हि मुतलक़ और अहले ईमान के जान माल का मालिक हूँ, बलकी ज़मीन का खुदा हूँ। भोले भाले मोमिनीन हमज-बेसमझ को तमीज़े हक़ व बातिल नहीं है लिहाज़ा वह उनको अपना मौला बलकि खुदा मानते हैं।

अब्दुल कादिर नज़मुद्दीन के तरह ही उनके जानशीनों ने खुसूसन ताहिर सैफ़ुद्दीन और मोहम्मद बुरहानुद्दीन ने अमल किया है और कर रहे हैं। दुआते हक़ की सीरत के खिलाफ़ इनका अमल है जो उनके बुतलान की वाज़ेह दलील है। इमामुज़्ज़मान (अ.स.) दीन व दुनिया के मालिक हैं मगर उन्होंने और उनके बुज़ुर्ग आइम्मा (अ.स.) और आक़ा अली (अ.स.) ने दुनिया को तलाक दी। "इमामुन यरद्दुनिया बि मुअख्खरि ऐनिही व मन हुव: मिनहा आखिज़ुन व हुव: तारिकुन" इब्ने हानी कहते हैं कि इमाम मोइज़ (अ.स.) ने दुनिया को तिर्छी आँख से देखी, बहुत से लोग दुनिया को लेते है मगर इमाम (अ.स.) ने दुनिया को नहीं ली।

जे कोई खुदा ना लोग छे ते ने खुदा सिवा कोई ध्यान नथी,
आवा अगर अवतार मनख मा ऐहवा मनख इमकान नथी,
ते सब औलिया नी नज़र मा दुनिया बराबर हा नथी,
मरवु छे जिवु यह लोगों नु मुवाजे कोई इंसान नथी,
दुनिया मा आवा दुनिया न देखी एहवा सत ना घेरा छे मुवा नथी,
वह जीवा दाइम जन्नत अंदर डेरा छे।
- शेख सादिक अली साहब की नसीहत।

(13)
"ज़ुहदो तक़वा पर रहो, इम्तिहानात सहो, जि कहो सांचु कहो, कीका भाई जल्दी पढो।"

ऐ मेरे फ़र्ज़दं अर्ज़मंद ज़ुहद व तक़वा पर हमेशा रहना और जो भी इम्तिहान अल्लाह की तरफ़ से आए सहते रहना और हमेशा सच बोलना। सैफ़ी आक़ा जितने इल्म व अदब में आला मुकाम वाले थे उतने हि आप ज़ुहद व तक़वा में आला मुकाम वाले थे। आप के शागिर्द रशीद इमादी जनाब लिखते हैं: ज़ुहद (खालिस तरीके से इबादत करने वाला) बहुत ही कडवा है लेकिन हमाते मौला ने इसी ज़ुहद को अपने दुनिया में से लज़ीज़ बनाया अख्तियार किया। आपके ज़ुहद और तकवा (अल्लाह से डरना) कि मिसाले मशहूर हैं इसी लिए आप अपने बेटे को ज़ुहद व तकवा, और इल्म व मारिफ़त में अपना नज़ीर देखना चाहते है (अपने जैसा)। आल्ल-लाहो कुदसहुमा।

(14)
"रहजु सीधा ने समा, कहे शहज़ादा नमा, जे नमा ते रब ने गमा, कीका भाई जल्दी पढो।"

सीधा रस्ता पर रही सीधा समा अने सादा रहजु ताकि लोगों कहे कि शहज़ादा कितना नमनताई वाला छे। शहज़ादा दाईज़ादा अल्लाह सुबहानहू की राह पर चल कर अल्लाह के महबूब बने हुए हैं जो भी शख्स तवाज़ोअ वाला है वह अल्लाह का महबूब है लिहाज़ा मेरे प्यारे बेटे हमेशा मतव्ज़ा रह कर अपने रब को खुश करते रहना।

(15)
"अदना थई रहजु गुलाम, शुक्र ना कहज़ु कलाम, सजदा दई करज़ु सलाम, कीका भाई जल्दी पढो।"

और इमामुज़्ज़मान के अदना गुलाम बन कर रहना और शुक्र ए खुदा पर लाज़िम रहना और सज़दा बज़ा कर सलाम करना जिस तरह:

(16)
"माहरा बावा जी ज़की(र), जई उजैन झुकी, लीदी शान मलकी, कीका भाई जल्दी पढो।"

(17)
शह ज़की (र) यहाँ सि गया, नज़मेदीं (र) भी न रहया, केवी दुनिया नि मया, कीका भाई जल्दी पढो।"

(18)
"जई जन्नत मा वसा, ते जगह जई नि रहया, जहां छे रब नी पसा, कीका भाइ जल्दी पढो।"

जिस तरह मेरे वालिद माजिद मौलाना अब्दुल तय्यब ज़कीयुद्दीन (क़ु.स.) ने मोतवाज़ाना शान से उजैन जा कर मलिकी शान के मालिक हुए दीन व दुनिया के शाह बन कर इमाम (अ.स.) के अदना गुलाम बन कर दाअवतुल हक़ की अज़ीमुशशान खिदमत की और आप दुनिया से सिधारे इसी तरह मेरे भाई आक़ा नज़मुद्दीन भी नहीं रहे। कैसी है इस दुनिया की दया मया? अफ़सोस!! दोनों ने जन्नत को अपना मसकन (मकान) बनाया जिस जन्नत में अल्लाह कि बेशुमार नेअमतें हैं बस इसी तरह ऐ मेरे कीका भाई तुम भी इन दुआतुल हक़ की सीरत पर चलकर जल्द अज जल्द इल्मे लदुन्नी हासिल करने के बाद उनसे लाहक हो जाओ।

(19)
"खार करसो न भला, लिहव: मा पडसो न भला, आव सर सो न भला, कीका भाई जल्दी पढो।"

हसद (खार), हिर्स (लालच), और तक्ब्बुर (घमंड) तमाम मअसियतों (गुणाहों) कि जड है। लिहाज़ा ऐ मेरे फ़र्ज़दं इन सब से और लहवे - लअब (दुनिया का दिखावा) से हमेशा दूर रहना। मेरी इस नसीहत को भूल मत जाना और इसके साथ इल्म को हासिल करने में खूब कोशिश करते रहना।

(20)
"कहां दुनिया मा अमान, कोना पासे छे ज़िमान, रात दिन तीरों कमान, कीका भाई जल्दी पढो।"

दुनिया में कहीं भी अमान नहीं है सिवाए इमामुज़्ज़मान के कौन है अमान का ज़ामिन? कोई नहीं बल्की दिन रात किस्म-किस्म के मुसीबतों की तीर अंदाज़ी हो रही है, लिहाज़ा अब इससे महफ़ूज़ रहने के लिए इल्म पढो।

(21)
"दारा जाए छे ने रात, रहे छे लोगों मा वात, जेवु कीदु तेवु साथ, कीका भाई जल्दी पढो।"

दिन रात पास हो रहे हैं, हालात बदलते रहते हैं जिसका किस्सा कहानी बाकी रहता है और जैसा अमल किया वैसी हि ज़ज़ा मिलती रहती है लिहाज़ा ऐ मेरे प्यारे जल्द-जल्द इल्म व अमल के दर्ज़ात तय कर के अपनी बेहतरीन नाम ना छोड के जाओ।

(22)
"जे वारे बिबी करो, रखे फ़ितनत मा पडो, इहने कोना मा धरो, कीका भाई जल्दी पढो।"

(23)
"जो जोहर जागे, जे नी बीबी सी सूँ-सूँ थई, बीबी सी जन्नत गई, कीका भाई जल्दी पढो।"

मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (क़ु.स.) अपने बेटे मोहम्मद बदरूद्दीन औरत कि फ़ितनत से दूर रहने की वसीयत फ़रमा कर बताया कि औरत के बाइस क्या क्या फ़ितनते हुई हैं हत्ता (यहां तक) कि औरत (हव्वा) के बाइस ही आदम अ.स. जन्नत से निकाले गए। आप रोशन ज़मीर थे आइन्दा होने वाले वाकियात से बखूबी वाकिफ़ थे कि मौलाना बदरूद्दीन को नज़मुद्दीन के खानदान कि एक औरत जहन्नम की खाई चमन आई के ज़रिए ज़हर पहुँचेगा। जिस तरह जअदा के ज़रिए इमाम हसन (अ.स.) को ज़हर पहुँचा लिहाज़ा आप अपने बेटे को इस सानिहा (वाकिया जो बनने वाला है) से वाकिफ़ कर के उससे चौकन्ना रहने का इरशाद किया। मौलाना बदरूद्दीन (क़ु.स.) ने नज़मुद्दीन पर नस नहीं की बलकि इशारा भी नहीं जिसका नतीज़ा यह हुआ कि आप शहीद किए गए।

मान लो इशारा किया भी हो तो इशारा काफ़ी नहीं। नस-ए-जली यानी खुली तअय्युन से भी हर इमाम य दाई का तकर्रुर होता है। रसूलल्लाह (स.अ.व.) ने आक़ा अली (अ.स.) के लिए हर मोकिफ़ मे नस के इशारात किए थे फ़िर फ़रमाने इलाही हुआ कि, "या अय्युहर रसूलो बल्लिग...." ऐ रसूल जो फ़रमान (अली अ.स. के मुताल्लिक) हुआ है उसकी बरसर मिला (बिना कमी पेशी के) तबलीग करो अगर नहीं करोगे तो आपकी तमाम तबलीगात बेकार हो जाऐगी... पस आपने गदीर-ए-खुम में हज़ारों मुस्लमानों के दरमियान अली-ए-आला (अ.स.) पर नस-ए-जली फ़रमाई। मौलाना बदरूद्दीन (क़ु.स.) की तबियत पुर्सी के लिए दो भाई शेख अब्दे अली वली और शेख अब्दुल्लाह जुमादिल आखिर कि २८वीं गए और नस के इज़हार करने कि अर्ज़ की हालांकि आप ज़्यादा बिमार नहीं थे और सिर्फ़ तीस साल के नवजवान थे। मौलाना ने फ़रमाया कि पहली रजब को मैं इज़हार करूँगा। आपने यह नहीं फ़रमाया कि मैं नज़मुद्दीन पर नस कर चुका हूँ अगर फ़िल वाकेही नस कर चुके होते तो इन दोनों भाईयों को ऐसा कह कर इनको गवाह रखते और कहते कि नज़मुद्दीन मेरे मनसूस हैं दर हक़ीक़त नस का अम्र इलहाम में इमाम है। इमाम (अ.स.) का इलहाम नहीं होने से आपने नस नहीं की और आपके वालिद माजिद मौलाना

सैफ़ुद्दीन की वसीयत के मुताबिक नस पर कायम रहे। गैर मुस्तहिक पर नस नहीं फ़रमाई, नस की हिफ़ाज़त की। हर ज़मान में इमामुलहुदा के मुकाबिल इमामुद दलाल (गुमराहों के इमाम) होता है। साहिबुल हक़ के मुकाबिल मुद्दई बातिल उठता है जिस तरह मूसा (अ.स.) के मुकाबिल फ़िरऔन उठा और "अना रब्बुकुम आला" का दावा किया, यहां भी ऐसा ही हुआ!! जब भी लोगों में असियां (भूल चूक) की ज़्यादती होती है तब साहिबुल हक अच्छे बुरे की तमीज़ के लिए मख़्फ़ी हो जाते हैं।

"व गदा मकामुन नूरे मुसततिरन लिमा....": मौलाना अली बिन मोहम्मद वलीद (क़ु.स.) का यह फ़रमान है हर आकिल के लिए इतना कहना काफ़ी है कि नज़मुद्दीन और उनके जानशीनों ने दुनीया के खातिर दीन को अपना आला-ए-कार (हथीयार) बनाया।

(24)
"घनु बोली सूँ करुं, सरवे बोली सूँ करुं, भेद खोली सूँ करुं, कीका भाई जल्दी पढो।"

मेरे प्यारे बेटे बस इतना कहना काफ़ी है अब ज़्यादा बोल के भेद खोल के क्या करूं आकिल को इशारा काफ़ी है।

(25)
"जो पडा होता किताब, अरबी करतो खिताब, हवे हर तरह शिताब, कीका भाई जल्दी पढो।"

बेटा! अगर किताब पढ चुके होते तो अरबी ज़बान में खिताब करता लेकिन अब हर तरह जल्दी - जल्दी पढो। मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (क़ु.स.) मौलाना बदरूद्दीन के जिस्मानी और रूहानी, मिज़ाज़ी और हक़ीक़ी वालिद है अभी आप बालिग नहीं हुए थे सिर्फ़ ६ साल के थे लेकिन आपके वालिद माजिद ने आपको बिल कुव्वत ताईद की। आपके मुकाम को बुलंद किया सिर्फ़ तीस साल की उम्र में ही आप ने इमामुज़्ज़मान (अ.स.) के इलहाम और ताईद से दाअवतुल हक की खिदमत करके अलमास के आटे (ज़हर) ज़रिए शहादते उज़मा का अज़ीमुशशान मर्तबा हासिल कर के खमीस (जुमेरात) २९-६-१२५६ को विसाल फ़रमाया। आपके बाद मुद्दई बातिल नज़मुद्दीन बाबुल के कुएं में लटक कर कौम को बुलबाल में वाकिए कर के हलाक हुआ। वल्लाहो अज़ीज़ुन ज़ुनतिकाम।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलेहि राजिऊन।

इसी तरह ऐसी हि होती हैं मुसीबतें और सख्ततरीन मुशकिलत फ़िर भी कोई आँख न रोए तो उसका उज़र मक़बूल नहीं। अफ़सोस-सद-अफ़सोस मुहम्मद बदरुद्दीन (र) के बाद तमाम उम्मीदें कताअ हो गई और आखिरते के मुसाफ़िरों क सफ़र बंद हो गया।

...मुल्ला कुद्दूस हुसैन ने अपने वालिद माजिद मुल्ला मोहम्मद अली कि बयान कर्दा इस तशरीह को २९ - रजब - १३६३ हि. इतवार मुताबिक ९ जुलाई सन १९४४ ईसवीं बोहरा गुजराती ज़ुबान में लिखी जिसका उर्दू जबान में यह तर्जूमा कुछ तरमीम व इस्लाह के बाद मज़मून की सलामती के साथ ३ सफ़र सन १४१८ हि. इतवार व मुकाम मुम्बई लिखा गया।

<u>बाबिल बलबाल और हारूत मारूत</u>

खास नोट: इल्म ना मोती झडो की तशरीह के आखिर में यह जुमले तशरीह तलब है कि मुद्दई नज़मुद्दीन बाबुल के कुएं में लटक कर कौम को बलबाल (परेशानियात) में वाक्ये कर के हलाक हुआ। वाजेह रहे कि क़ुरआन मे सूरतुल बक़रा की आयत नम्बर १०२ में सुलेमान (अ) नबीअल्लाह के मुल्क पर शयातीन के जादू पढने की जिक्र के बाद लिखा है, "वमा उन्ज़िल: अलल मलकेनि बि बाबिल: हारूत: व मारूत: ..... और वह लोग उस जादू के ताबेअ हुए जो हारूत मारूत फ़रिश्ते पर उतरा था। यह दोनों हर किसी को जादू सिखाते और कहते कि हम तो फ़ितनती हैं ही मगर तू काफ़िर मत होना इस तरह यह लोग इन दोनों से ऐसा जादू सीखते कि जिससे शौहर और उसकी जौजा के दरमियान तफ़रिका डालते... इस आयत की ज़ाहिरी तफ़सीर यह आई है कि दो फ़रिश्तों ने अल्लाह कि बेफ़रमानी कि तो वह दोनों बाबिल बाबिलून के कुँए मे ओन्धे लटकाए गए। वह प्यास से लखलखाते हैं हालाँकि उनके सामने हि पानी है मगर पहुँच नहीं सकते.... हरत यानी नुकसान और मरत यानि बुतलान, यह दोनों नुकसान और बुतलान में वाकिअ हुए लिहाज़ा वह हारूत मारूत कहलाए।

इस आयत कि हक़ीक़ी तफ़सीर करते हुए इखवानुससफ़ा के साहब इमाम मौलाना अहमद अल मसतूर (स.अ.व.) ने लिखा है उसका खुलासा यह है कि एक शहंशाह को अपनी दुनियावी इंतिहा दर्ज़ा की जाह-जलालत की हालत में ख्वाब में अल्लाह सुबहानहू ने उसको रूहानी उखरवी हालत का जलवा बताया जिसके मुकाबिल दुनयावी, जिस्मानी, जाह-जलालत उसको हिच (बहुत कमतर) नज़र आने लगी इसलिए अब वह रूहानियत की तलाश में सरगिरदान (मसरूफ़) हो गया। इंतिहाई मुसीबतें और मुशकिलात के बाद उसकी इमामुज़्ज़मान शंहशाह ए रूहानियत (अ.स.) तक रिसाई (पहुँच) हुई। इमामुल हक़ (अ) ने अपने यहां से दो मुअल्लिम को भेजे और फ़रमाया कि तुम

दोनों बादशाह और उसके वज़ीर को रूहानियत से आगह करना, दीन व आखिरत के उलूम की तअलीम देना और फ़ारिग होते ही जैसे गए हो वैसे हि मुझ से आ मिलना खबरदार!! वहां दुनीया है दुनीया में फ़ंस मत जाना। यह दोनों इमामी दाअवत के फ़रिशता सिफ़त रुकन थे, हुज्जत थे उन्होंने ब फ़रमाने इमामी बादशाह और उसके वज़ीर को रूहानियत का सबक पढाया। तालीम कि तकमील की और विदा होने लगे तो बादशाह ने उनकी खिदमत के सिले में दुनीयावी मुल्क तौहफ़तन पेश किया आखिर मिठी सुहानी दुनिया! कौन इंकार करे! दोनों फ़रिश्ता सिफ़्त मुअल्लिमों ने तौहफ़ा कुबूल कर लिया दोनों में से बडा मुअल्लिम बादशाह बना और छोटा मुअल्लिम वज़ीर बना।

(बादशाह और वज़ीर दोनों दुनिया से हट गए और फ़रिश्ता सिफ़्त बन गए। फ़रिश्ता शैतान बन गए, और शैतान फ़रिश्ता बन गए। अल्लाह-अल्लाह)

यह दोनों आसमानी रूहानी मुल्क को छोडकर दुनयावी मुल्क पर लुभा गए। इमाम अ.स. कि वसियत को भूल गए। पहले फ़रिश्ता थे अब शैतान बन गए। हरत और मरत यानि नुकसान ए उखरवी और बुतलान में वाकिअ हो कर हारूत मारूत बन गए। जिस तरह बाबिल के कुँए में हारूत मारुत ओंधे लटकाए गए और बाबिल के बलाबिल (परेशानियों) में लखलखाए। लोग इन दोनों आलिम की दुनियादारी और फ़िस्क फ़िजुरी देख कर ज़्यादा फ़ितना में गिरे, ज्यादा दुनियादार बन गए। ऐसा कह कर कि यह दोनों तो आलिम हैं और वह दोनों दुनियादारी में गिरिफ़तार हैं तो दुनिया ही है जो कुछ है। दीन और आखिरत कुछ भी नहीं। (मआज़ल्लाह)।

मौलाना मोइय्यद शीराज़ी (कु.स.) ने इस किस्से को दौरे मोहम्मदी में इस्लाम के इब्तिदाई फ़ितनती हालात को मद्देनज़र रख कर लिखा है।

नुकिसू अवेलहुम बेबाबिले ज़हरन..... वह सखीफ़ा वाले हलाकी हो उसके लिए बाबिल की चाह (कुँए) में ओंधे लटकाए गए। यह तो ऐसे जुम्ले हैं जिसकी तफ़सील आइंदा आऐगी। यह हारूत मारुत साफ़ शिफ़ा के पानी (यानि इल्मुल हिक़मत) से महरूम रखे गए। अहलेबैत (अ.स.) को तशना (प्यासा) रखने वाले इससे महरूम हैं वह इससे लखलखाते रहेंगे।

अब इल्म ना मोती झडो कि तशरीह के अखिरी जुम्लों कि तशरीह आप जरूर समझ गए होंगे। मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन (कु.स.) के फ़र्ज़दं अर्ज़मंद कीका भाई सय्यदना मोहम्मद बदरूद्दीन (कु.स.) को ज़हर पहुँचा के आपकी नस के बगैर आपकी इज़ाज़त के बगैर आपके मसनद पर आ बैठने वाले अब्दुल कादिर नज़मुद्दीन जो पहले मुकासिर थे दआवत के एक रुकन थे मगर बाद में (मिसल ए हारूत मारूत) दाईउल मुतलक बन बैठे और फ़िर दुनियादारी में इतनी हद तक फ़ंसे और लोगों को फ़ंसाया कि इनको मुंतखिब करने वाले अब्दे अली इमादुद्दीन ने कहा कि "हलकना-हलकना"। हम हलाक हो गए कि किस शख्स को हमने दआवत की बागडोर सौंपी। उन्होंने यह भी कहा कि सौंपी है उसको इनान, दी है उसे रेसमां, चाहे जिधर ले चले अपना सनम वाह वाह। अब्दे अली सैफ़ी आक़ा ने उनका नाम अब्दुल क़ादिर रखा जो पहले यूसुफ़ था। मतलब यह कि यह यूसुफ़ नहीं दआवतुल हक़ के मिस्र के शाह यूसुफ़ नहीं बल्कि गुलाम है, अब्द है। अब्दुल कादिर है। यह है मौलाना अब्दे अली सैफ़ुद्दीन की पेशगोई।

देखिए आज मुद्दई नज़मुद्दीन के वारिस कितने कितने और कैसे कैसे दुनियादारी में फ़ंसे हुए हैं आज भी वह लंदन में है। उनका यह लंदन का सफ़र ४७ वां है...!!!

नासिह (नसीहत के साहब) सादिक अली साहब की एक अज़ीब पेशगोई

बंदा ए हकीर अहमद अली राज कि ब दौरान ए खिदमत माहे रमज़ान शाजाँपुर में वहां के मुतवल्ली सौ साला बुज़ुर्ग आलिम दीन मुल्ला अब्दुल हुसैन भाई से इंतिहाई मुखलिसाना आलिमाना मुलाकात रही। एक रोज़ मैंने उनके बावजूद तकय्यतन मौलाना मोहम्मद बदरूद्दीन (कु.स.) के नज़मुद्दीन पर नस के मुताल्लिक सवाल कर बैठा मुल्ला साहब भी तकय्यत वाले थे खामोश रहे, फ़िर दूसरे रोज़ मैं शाजाँपुर से विदा हुआ। बस स्टेण्ड पर पहुँचा कि मौसूफ़ मुल्ला साहब इंतिहाई तकलीफ़ से मेरे पास आए और कहा कि मैंने आपके सवाल का जवाब नहीं दिया तो आज रात ख्वाब में मुझे तंबिया करते हुए किसी ने कहां कि, "तुम्हारे पास साइल आए और सवाल किया तो जवाब क्यों नहीं दिया?" फ़िर आँख खुल गई लिहाज़ा मैं आपको फ़िलहाल जवाब में इतना बताता हूं कि शेख सादिक अली ने, "मोती जवाहिर" जिल्द दो (२) नसीहत में: अव्वल मिसरा २३ यमानी दुआत और दूसरे २३ मिसरे हिन्दी दुआत २३। कुल ४६ दुआतुल हक़ हुए।
" उन्वान वाली नसीहत में २३ बैत हर एक बैत के २ - २ मिसरा तो बाजुम्ला (कुल) ४६ मिसरा हुए। अव्वल मिसरा २३ यमानी दुआत और दूसरे २३ मिसरे हिन्दी दुआत २३। कुल ४६ दुआतुल हक़ हुए। उसके बाद आपने लिखा है कि, "पीर नस वगर ना गोया बुतों बराबर, मत तू नमावें सर नि पत्थर ना देवता पर।"

फ़िर बाद में आने वाला नस बगैर का पीर था, बुत था। (ऐ भाई) तू इस पत्थर नुमां बुत पर अपना सर मत झुकाना। इस तरह मौसूफ़ मुल्ला साहब ने मुझे मेरे सवाल का जवाब नासिह सादिक; सादिक अली की नसीहत से दिया। ज़ज़ाउल्लाह खयरन कसीरा।

मुलाहिज़ा कीजिए नसीहत दूसरी:

1. बुनियाद आ जहाँ नी मौकूफ़ छे फ़ना पर, मत एअतिमाद कर जे नादान यह बिना पर,
2. आया जे कोई यहां ते पाछा वला यहां थी, कोई रहया न रहसे इन्सां आ जगह,
3. पेलो छे देस तारा आ जिन्दगी ना दिन नो, नज़दीक मा तू जासे मय्यत थई खबा पर,
4. निकला ने निकली जासे दारा पवन ना मानिदं, बखशाव जे खुदा थी तू रोई ने खता,
5. अम्मारा जीव तारो दुशमन छे नपट छे जानो, हरगिज़ तू मत लुभा जे जीव नी हवा पर,
6. थाए तो करजे हरदम हर कोई थी भलाई, मत तू मरोडे दिल ने हर कोई ना,
7. रूतबा मा अगर चढे तो यह छे तने मुबारक, ते पर तू नम जे नमवु ज़ीनत छे मर्तबा पर,
8. सब घाव थी ज़्यादा कारी छे घाव ज़बान नु, तासीर कहा करे छे मरहम ज़बान ना घाव नु।
9. ते वास्ते ज़बान ने करजे लगाम दाइम, हरगिज़ रवां न करजे ना गुफ़्त बोलवा पर
10. ईमान मा न करज़ि आमेज़ तू निफ़ाकी, गोया छे यह करफ़ती खुशबू यी ना...।
11. पढो अने इल्म ना उस्ताद पासे जा जे, दौरे छे जिम प्यासो पानी ना हर झरा पर।
12. आपी ने तू खुदा ने कर जे तू खुदा थी लेहनु, सब माँगवा नि आव तारी कब्र नि ...।
13. जे कब्र ना अन्दर जई ने अगर गडे तो, रहमत नु आब वरसे वह लहद ना घडा पर।
14. एहसान गर करे तो अहसान नि विसर जे, हरगिज़ न याद करजे अहसान ना...।
15. हर शख्स नी बदी ने हिरदा थी भूल जे तू, बलकि माफ़ करजे यह माफ़ छे खुदा पर।
16. अपना उयूब मा देखी ने सिरंगुं था, मत कशफ़ कर ज़बान थी कोई...।
17. खोवु छे सहल लेकिन मुशकिल निपट छे करवु, भले करे तो कहज़े यह छे भलु भला पर।
18. अपनी कद्र विचारी आगे कदम तू धरजे, हर एक अमर मा रहजे इंसाफ़ ना करा पर...।
19. मस्जिद छे घर खुदा नु मस्जिद नु आशना था, देखे छे रब अर्श थी मस्जिद ना आशना पर।
20. मूसा ने थई खुदा थी खलवत छे ते थी ज़्यादा, पाँचे वक्त इमामत कुरआन ना लिखा...।
21. अमवाल मा खुदा नु हक़ छे ज़कात बेशक, हरगिज़ खुदा ना हक़ मा जासो न कोई दगा पर
22. जे कोई खुदा ना हक़ ने मोमिन थई ने खासे, माथा मा दाम दई ने मुकासे पग तवा पर।
23. दौलत नी छे नजासत यारों रिबा (ब्याज़) मुकर्रर, गंदी न करजे दौलत लपटाई नि रिबा पर।

23 मिसराअ अव्वल और 23 मिसराअ सानी, कुल 46 मिसरा ते बाद सादिक अली साहब लिखे छे:

छे पीर नस वगर ना गोया बुतों बराबर, मत तू नमावें सर ने पत्थर ना देवता पर।
खोटी करामतों पर नादान मत लुभा जे, बाज़ीगरों चले छे एक पांव सी रसा पर।
तय्यब इमाम (अ.स.) खातिर खलकत करी खुदा ये, दाइम तू ध्यान धरजे खलकत ना मुद्दआ पर।
ताहा (अ.स.) वो मुस्तफ़ा (अ.स.) ना छे यह दिल रूबा छे खासा, सलवात पढ हमेशा ताहा (अ.स.) ना दिल रूबा पर।
आ इब्तिदा उम्र मा अब्दे अली हुमायू, हर एक कमालतों ना पहुँचा छे मुनतहा पर।
तासीर सैफ़े दीन ना छे खाक ए पा मा अहवी, हर एक दवा थी वर छे आ रार नि शिफ़ा पर।
तौहीद ना मज़ा मा शीरी नी छे निहायत, सादिक अली हमेशा रागिब रह यह मज़ा पर।

शेख सादिक अली (र) कि एक नसीहत में दुआतुल सत्र (पर्दे में) की जिक्र और उनके औसाफ़ (सिफ़त) के आखिर में यह मिसराअ है कि, "दाई ज़ोएब पहला नि छे बदरेदीन खिताम।"

शेख सादिक अली (र) कि एक नसीहत में दुआतुल सत्र (पर्दे में) की जिक्र और उनके औसाफ़ (सिफ़त) के आखिर में यह मिसराअ है कि, "दाई ज़ोएब पहला नि छे बदरेदीन खिताम।"

Above was prophecy (भविष्यवाणी) made by Sheikh Sadik Ali sahib.

First Dai: Syyedna Zoib a.q.
46th Dai: Shaheed Syyedna Mohammad Badruddin a.q.